

# समुच्चय चौबीसी जिनपूजा



वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपासजिनराय ।  
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय ॥  
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथुअरि मल्लि मनाय ।  
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढाय ॥



३-१  
संकेत  
पावन, मोर  
शेणक काल

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-जिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-जिन समूह ! अत्र मम सत्रिहितो भव भव वषट् ।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।  
भरि कनक कटोरी धीर, दीनों धार धरा ।  
चौबीसों श्री जिनचन्द्र, आनन्द कन्द सही ।  
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष महीं ॥



श्रीं से काल

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरान्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥



चन्दन जल

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।  
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी।  
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।  
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो भव-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥



सफेद चावल

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे।  
मुकता फल की उनमान, पुञ्ज धरों प्यारे। चौबीसों...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥



सोले चावल

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।  
जिन अग्र धरों गुणमंड, काम-कलंक हरे ॥ चौबीसों...

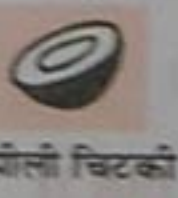
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो, कामबाणविध्वंसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥



सफेद चिटकी

मन मोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।  
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥ चौबीसों...

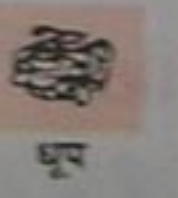
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥



सोली चिटकी

तम खण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगे।  
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै ॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥



धूप

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खैवत हों।  
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों ॥ चौबीसों...

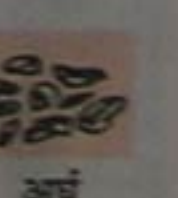
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥



फल

शुचि पक्क सस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।  
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥



अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।  
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतितीर्थकरेभ्योऽर्घ - पदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥



## जयमाला

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाथ हितहेत ।  
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत ॥१॥



### छन्द छत्तालन्द

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा ।  
शिव मग परकाशक, अरिगण नाशक चौबीसों जिनराज वरा ॥२॥

### छन्द पदुरि

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीत वसुअरि तुरंत ।  
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर ॥३॥  
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मदुतितन रसाल ।  
जय जय सुपास भवपास नाश, जय चंद्र चंद्र तन दुति प्रकाश ॥४॥  
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुननिकेत ।  
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपूज्य ॥५॥  
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुनगन अपार ।  
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शांति शांति पुष्टि करेत ॥६॥  
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अर जिन वसु अरि छयकरेय ।  
जय मल्लि मल्लि हतमोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत शल्ल दल्ल ॥७॥  
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम ।  
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥८॥

### छन्द धत्तालन्द

चौबीस जिनंदा आनंद-कंदा, पाप-निकंदा सुखकारी ।  
तिन पद जुगचंदा उदय अमंदा, वासव-वंदा हितकारी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-चतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

### सोरठा

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर ।  
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥

इत्याशीर्वादः ।

